


---

# RiNamochakamangalastotram

——  
ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : RiNamochakama.ngalastotra

File name : mangalastotra.itx

Category : navagraha, stotra

Location : doc\_z\_misc\_navagraha

Author : traditional

Transliterated by : Aneesh Chinubhai aconline at indiatimes.com

Proofread by : Aneesh Chinubhai, Kirk Wortman kirkwort at hotmail.com

Latest update : November 11, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 23, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



---

# RiNamochakamangalastotram

---

## ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्

---



श्रीगणेशाय नमः ॥

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।

स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधकः ॥ १ ॥

लोडितो लोडिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।

धरात्मजः कुञ्जो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥ २ ॥

अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।

वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामकृत्वप्रदः ॥ ३ ॥

अेतानि कुञ्जनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।

ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।

कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणामाम्यहम् ॥ ५ ॥

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः ।

न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पापि भवति क्वचित् ॥ ६ ॥

अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल ।

त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥ ७ ॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये यान्ये ह्यपमृत्यवः ।

भयकलेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ ८ ॥

अतिवक्त्रदुराराध्य भोगमुक्त जितात्मनः ।

तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥ ९ ॥

विरिञ्चिशकविष्णूनां मनुष्याणां तु डा कथा ।

तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः ॥ १० ॥

पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।

ऋणदासिद्धुःषेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥ ११ ॥

ओभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।


मडतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥ १२ ॥

एति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणभोयकमङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।


Encoded by Aneesh Chinubhai

Proofread by Aneesh Chinubhai, Kirk Wortman kirkwort at hotmail.com

---

——  
*RiNamochakamangalastotram*

pdf was typeset on June 23, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

